पाठ 13 **दिसम्बर 22-28**

एकता का अंतिम पुनर्स्थापन

सब्त अपराह्न **सितम्बर 22**

इस सप्ताह के पाठ के लिए पढ़ें : यूहन्ना 14: 1-3, यशा० 11: 1-10, प्रका० 21: 1-5, 1थिस्स० 4: 13-18, प्रका० 22: 1-5, यशा० 35: 4-10.

याद वचन: *"पर उसकी प्रतिज्ञा के अनुसार हम एक नये आकाश और नई पृथ्वी की आस देखते हैं जिनमें धार्मिकता वास करेगी" (2पत० 3: 13)।*

बाईबल की महानत्तम प्रतिज्ञाओं में से एक यीशु के पुन: आने की प्रतिज्ञा है। इसके बिना हम कुछ नहीं हैं, क्योंकि हमारी आशा उस प्रतिज्ञा में केंद्रित है और इसी में हमारा सार है। जब मसीह स्वर्ग के बादलों में से होकर आयेगा, वह सब जो पार्थिव एवं मानव-निर्मित और इस प्रकार क्षणभंगुर है और कभी-कभी अर्थहीन है सब मिट जायेगा। स्वर्ग में 1000 वर्ष पूरे होने के बाद, यह पृथ्वी इसकी लड़ाईयों, महामारियों, अकाल, और दुखद घटनाओं से नई की जायेगी और मुक्ति पाये-हुओं का रहने का स्थान होगा जो आखिरकार अपने प्रभु और एक दूसरे के साथ पुन: एक हो जाएँगे।

मसीह के दूसरे आगमन में नये नियम में उम्मीद एक मुख्य विषय है। हम भी सेवेंथ-डे-ऐडवेंटिस्टों के तौर पर उसके दूसरे आगमन की इच्छा रखते हैं। दूसरे मसीही भी इस प्रतिज्ञा के पूरे होने की इच्छा रखते हैं। निश्चित रूप से हमारा नाम स्वयं उस उम्मीद् की उद्घोषणा करता है।

इस अंतिम पाठ में, हम इस प्रतिज्ञा को देखते हैं और मसीही एकता के लिए इसका क्या अर्थ होता है। मसीह में हमारी एकता अकसर मानव सीमाओं और कमजोरियों के द्वारा ललकारी जाती है परन्तु हमें हमारे विखंडन के लिये अब समाधान खोजने की जरूरत नहीं रह गई है, क्योंकि अब विखंडन नहीं होगा। दूसरे आगमन में हम प्रभु के साथ अंतत: एक होंगे और एक पुनर्स्थापित परिवार का गठन करेंगे।

रविवार **दिसम्बर 23**

मसीह के वापस आने की निश्चितता

यूहन्ना 14: 1-3 यीशु के दूसरे आगमन की सबसे अधिक जानी गई प्रतिज्ञा है। यह प्रतिज्ञा किस प्रकार के जीवन के विषय बतलाती है जो छुटकारा प्राप्त किये हुए लोग नई पृथ्वी में जीयेंगे ?

---

* सब्त, दिसम्बर 29 की तैयारी के लिये इस सप्ताह के पाठ का अध्ययन करें।

मसीही विश्वासियों ने मसीह के लौटने को "धन्य आशा" करार दिया" (तीतुस 2:13) उन्होंने विश्वास किया कि पवित्र शास्त्र की प्रतिज्ञाएँ और भविष्यद्वाणियाँ दूसरे आगमन के समय पूरी होंगी, क्योंकि यह मसीहियों के तीर्थाटन (तीर्थयात्रा) का लक्ष्य है। वे सब जो मसीह से प्रेम करते हैं उस दिन की देख आशा करते हैं जब वे आमने-सामने उसके साथ सहभागिता कर सकेंगे। उन पदस्थलों में उसके वचन एक निकटता और आत्मीयता को संकेत करते हैं जिसे हम साझा करेंगे- केवल यीशु के साथ ही नहीं वरन प्रत्येक के साथ।

मसीही इस प्रतिज्ञा में विश्वास करते हैं क्योंकि बाईबल हमें इसके पूरे होने को विश्वास दिलाती है। यह आश्वासन हमारे लिये है क्योंकि हम यीशु के वचन में विश्वास करते हैं: "मैं फिर आऊँगा" (यूहन्ना 14:3)। बिलकुल जैसा मसीह के पहले आगमन की भविष्यद्वाणी हुई थी, वैसा ही उसके दूसरे आगमन के विषय में पहले ही कह दी गई है, यह पुराने नियम में भी वर्णित है। जलप्रलय से पूर्व परमेश्वर ने हनोक को बताया कि मसीह महिमा में आयेगा और पाप का अंत कर देगा। उसने भविष्यद्वाणी की "हनोक ने भी जो आदम से सातवीं पीढ़ी में था, इनके विषय में यह भविष्यद्वाणी की "देखो, प्रभु अपने लाखों पवित्रों के साथ आया कि सबका न्याय करे, और सब भक्तिहीनों को उनके अभक्ति के सब कामों के विषय में जो उन्होंने भक्तिहीन होकर किये हैं, और उन सब कठोर बातों के विषय में जो भक्तिहीन पापियों ने उसके विरोध में कही हैं, दोषी ठहराए" (यहूदा 14, 15)।

हजार साल पूर्व यीशु इस पृथ्वी में आया, राजा दाऊद ने भी परमेश्वर के लोगों को एक साथ जमा करने के लिये मसीह के आने की भविष्यद्वाणी की थी। "हमारा परमेश्वर आएगा और चुपचाप न रहेगा, आग उसके आगे-आगे भस्म करती जाएगी; और उसके चारों ओर बड़ी आँधी चलेगी। वह अपनी प्रजा का न्याय करने के लिये ऊपर के आकाश को और पृथ्वी को भी पुकारेगा: "मेरे भक्तों को मेरे पास इकट्ठा करो, जिन्होंने बलिदान चढ़ाकर मुझ से वाचा बाँधी है।" (भजन 50: 3-5)।

यीशु का दूसरा आगमन उसके पहले आगमन से निकटता से जुड़ा हुआ है। भविष्यद्वाणियाँ जिन्होंने उसके जन्म और सेवकाई के विषय में भविष्यद्वाणी की थी (उदाहरणार्थ, उत्प० 3:15; मीका 5:2; यशा० 11:1; दानि० 9:25,26) उसके दूसरे आगमन के विषय प्रतिज्ञा में हमारी आशा और भरोसे के लिये नींव हैं। मसीह "अब युग के अन्त में वह एक ही बार प्रगट हुआ है, ताकि अपने ही बलिदान के द्वारा पाप को दूर कर दे, वैसे ही मसीह भी बहुतों के पापों को उठा लेने के लिये एक बार बलिदान हुआ; और जो लोग उसकी बाट-जोहते हैं उनके उद्धार के लिये दूसरी बार बिना पाप उठाए हुए दिखाई देगा" (इब्रा० 9:26,28)।

कौन से तरीके हैं जिन्हें आप दूसरे आगमन की प्रतिज्ञा से उम्मीद और सांत्वना के तौर पर ले सकते हैं?

सोमवार **दिसम्बर 24**

पुनर्स्थापन की प्रतिज्ञा

पढ़ें यशायाह 11: 1-10. इस्राएलियों को कौन-सी प्रतिज्ञा दी गई है और छुड़ाये गये लोगों के अनंत निवास स्थान के बारे में यह क्या कहता है?

_____

_____

बाईबल पृथ्वी की सृष्टि की कहानी से शुरू करती है (उत्प० 1-2). यह सुन्दर और सामंजस्यपूर्ण संसार का एक वर्णन है जिसे हमारे प्रथम माता-पिता आदम और हवा के भरोसे दिया गया था। मानव जाति के लिये एक सुन्दर संसार, जिसे परमेश्वर ने सृजा। बाईबल के अंतिम दो अध्याय भी छुड़ाये गये लोगों के लिये परमेश्वर द्वारा एक सुन्दर और सामंजस्यपूर्ण संसार की सृष्टि की बात करते हैं (प्रका० 21,22), परन्तु इस बार यह अति सटीक ढंग से पाप की विभीषिका से पृथ्वी के पुनरुत्थान और पुनर्सृष्टि की बात करता है।

बाईबल बहुत-सी जगहों में घोषणा करती है कि छुटकारा प्राप्त लोगों का यह अनंत घर वास्तविक घर होगा। यह कोई काल्पनिक घटना या स्वप्न नहीं होगा। छुटकारा पाये हुए लोग इसे देख, सुन, सूंघ, छू सकेंगे, और एक नया अनुभव, एक नया जीवन महसूस कर सकेंगे। यशायाह 11 अध्याय की भविष्यद्वाणी एक सुन्दर अवतरण है जो मसीह के आने की पूर्व सूचना है जो एक नये युग का निर्माण करेगा। वह सभी हिंसा का अंत करेगा और एक अनंत शांति का प्रवेशक होगा। इस नई पृथ्वी में परमेश्वर के राज की वैश्विक संगति (मेल) स्थापित होगी।

पढ़ें प्रका० 21: 1-5. इस नई संगति (मेल) के परिणाम स्वरूप हमेशा के लिये क्या मिट जायेगा ?

_____

_____

छुड़ाये हुए (मुक्ति पाये हुए) लोगों के लिये जो इंतजार करता है, इस विषय पर एलेन जी० ह्वाईट ने लिखा: "जिस प्रकार अनंत काल आगे बढ़ता है, वे मसीह और परमेश्वर के अति महिमामय एवं समृद्ध प्रकाशन को पेश करेंगे। जिस प्रकार ज्ञान में तरक्की होती है, उसी प्रकार प्रेम, आदर, और आनन्द में वृद्धि होगी। लोग जितना अधिक परमेश्वर के विषय जानेंगे, उतना ही अधिक उनके द्वारा उसके चरित्र की प्रशंसा होगी। जैसा यीशु शैतान के साथ महान संघर्ष में आश्चर्यजनक उपलब्धियों और छुटकारे के धन (कीमत) को उनके सामने खोलता है, छुड़ाये गये लोगों का हृदय जोरदार भक्ति के साथ

धड़कने लगता है, और वे मजबूत हाथ से सोने के तुरही बजाते हैं: और दस हजार गुणा दस हजार और हजारों हजार आवाज़ एक साथ प्रशंसा के गीत गायेंगे" – Ellen G. White, The Story of Redemption, PP. 432,433.

किस प्रकार हम परमेश्वर के चरित्र को अभी भी समझ सकते हैं? किस प्रकार दूसरों के साथ मेल और एकता में रहना परमेश्वर के स्वभाव और चरित्र के विषय अभी भी कुछ बहुत प्रकट करता है?

मंगलवार **दिसम्बर 25**

पुनरुत्थान और पुनर्स्थापित संबंध

कलीसिया के प्रारंभिक दिनों से मसीह के लौटने की प्रतिज्ञा, संभवत: किसी चीज से अधिक, परमेश्वर के लोगों के हृदयों को संभाला, खासकर परीक्षा की घड़ी में। जितना भी भयंकर उनका संघर्ष रहा हो, जितना भी शोकाकुल उनका दु:ख और दर्द रहा हो, मसीह के वापस आने की उम्मीद और दूसरे आगमन में सम्मिलित सभी अद्‌भुत प्रतिज्ञाएँ उनके साथ थीं।

पढ़ें 1थिस्स० 4: 13-18. इस अवतरण में कौन-सी प्रतिज्ञाएँ शामिल हैं? पुनर्स्थापित संबंध की उम्मीद के विषय में यह क्या कहता है ?

_____

_____

मसीह का दूसरा आगमन समस्त मानव-जाति को गहराई से प्रभावित करेगा। परमेश्वर के राज्य की स्थापना का एक महत्त्वपूर्ण पहलू चुने हुओं को इकट्ठा करना है। "और वह तुरही के बड़े शब्द के साथ, अपने दूतों को भेजेगा, और वे आकाश के इस छोर से उस छोर तक चारों दिशा से उसके चुने हुओं को इकट्ठे करेंगे" (मत्ती 24: 31)। इस जमा होने के क्षण, मरे हुए पवित्र लोग जी उठेंगे और अमरता को प्राप्त करेंगे (1कुरि० 15: 52-53)। "जो मसीह में मरे हैं, वे पहले जी उठेंगे" (1थिस्स० 4: 16) इसी क्षण का हम सब इंतजार कर रहे हैं। जी उठे लोग उनसे पुन: मिल जायेंगे जो उनकी उपस्थिति और प्रेम की लालसा किये हुए हैं। पौलुस इस घटना पर इस प्रकार खुशी जाहिर करता है: "हे मृत्यु तेरी जय कहाँ रही? हे मृत्यु तेरा डंक कहाँ रहा?" (1कुरि० 15: 55)।

यह रोगग्रस्त, बुढ़ापा, कुरूप शरीर नहीं है जो कब्र में चला गया था जो पुनरुत्थान में निकल आता है, परन्तु नया अमर, परिपूर्ण शरीर, जो कभी पाप द्वारा चिह्नित नहीं किया गया, जो उनके सड़ने का कारण बना। जी उठे संत पुनर्स्थापन के मसीह के काम की समाप्ति का अनुभव करते हैं, जो सृष्टि के समय परमेश्वर के पूर्ण स्वरूप को प्रतिबिंबित करते हैं (उत्प० 1: 26, 1कुरि० 15: 46-49)।

यीशु के दूसरे आगमन पर जब छुड़ाये गये मृत जी उठते हैं जीवित धर्मी जो पृथ्वी पर हैं बदले जायेंगे और नया, पूर्ण शरीर दिया जायेगा। "क्योंकि

आवश्यक है कि यह नाशवान देह अविनाश को पहिन ले, और यह मरणहार अमरता को पहिन ले (1कुरि० 15:53). अत: छुटकारा प्राप्त ये दो दल जी उठे और बदले हुए धर्मी "उनके साथ बादलों पर उठा लिये जाएँगे कि हवा में प्रभु से मिलें; और इस रीति से हम सदा प्रभु के साथ रहेंगे" (1थिस्स० 4:17)।

हमारे वैज्ञानिक युग में कुछ मसीही कुछ चीजों के लिये यहाँ तक कि "चमत्कार" के लिये प्राकृतिक वर्णन ढूंढने की कोशिश करते हैं। पुनरुत्थान की प्रतिज्ञा हमें क्या सिखलाती है कि केवल परमेश्वर के अलौकिक कार्य ही हमें बचा सकते हैं?

बुधवार **दिसम्बर 26**

छुड़ाये हुए लोगों के लिये नई पृथ्वी

"क्योंकि देखो, मैं नया आकाश और नई पृथ्वी उत्पन्न करता हूँ; और पहली बातें स्मरण न रहेंगी और सोच विचार में भी न आएँगी" (यशा० 65:17)। दोनों यशायाह और यूहन्ना ने प्रतिज्ञा की गई नई पृथ्वी को दर्शन में देखा।

प्रकाशितवाक्य 21:2, 9-27 में नया यरुशलेम छुड़ाये हुए लोगों के शानदार शहर के यूहन्ना के वर्णन पर विचार करें। एकता और मेल के विषय में ये पदस्थल क्या संकेत करते हैं जो इस शहर में होगा?

_____

_____

पढ़ें प्रका० 22:1-5. जीवन की नदी जो जीवन के पेड़ में से होकर परमेश्वर के सिहांसन से बहती है जो इसका विस्तार करती है नये शहर की दो अन्य महत्त्वपूर्ण विशेषताएँ हैं। नई पृथ्वी में उनका क्या उद्देश्य होगा?

_____

_____

जीवन का पेड़, जिसे आदम ने अपने गुनाहों के कारण, अपनी पहुँच को खो दिया (उत्प० 3:22-24), नये यरुशलेम में मसीह के द्वारा पुनर्स्थापित होगा। इस पेड़ तक पहुँच उनके लिये एक प्रतिज्ञा है जो जय प्राप्त करेंगे (प्रका० 2:7)। इसमें बारह प्रकार के फल लगते हैं, प्रत्येक महिना एक नई किस्म (प्रका० 22:2), संभवत: नई पृथ्वी के कारण यह होगा "एक नये चाँद से दूसरे नये चाँद के दिन तक और एक विश्राम दिन से दूसरे विश्राम दिन तक समस्त प्राणी मेरे साम्हने दण्डवत करने को आया करेंगे; यहोवा का यही वचन है" (यशा० 66:23)। "राष्ट्रों के चंगा होने" का संकेत भी लोगों के बीच सभी बाधाओं को हटाने की परमेश्वर की इच्छा को दर्शाता है और मानवता को इसके मूल रूप में पुनर्स्थापित करने का उद्देश्य है: एक अविभाजित परिवार में सब लोगों, जातियों, और

राष्ट्रों को मेल और आनन्द से जीते हुए परमेश्वर को महिमा देने हेतु पुनर्स्थापित करना है।

"राष्ट्रों को चंगाई" सभी राष्ट्रीय एवं भाषा संबंधी बाधाओं एवं अलगाव को हटाने को संकेत करता है....जीवन के पेड़ की पत्तियाँ राष्ट्रों के बीच की डालियों को चंगा करती हैं। राष्ट्र अब 'अन्य जाति' नहीं रहे परन्तु परमेश्वर के सच्चे लोगों के तौर पर एक परिवार में जुड़े हुए हैं (तुलना करें 21:24-26)। मीका ने जिसे सदियों पूर्व उम्मीद् की थी अभी पूरी हो रही हैं: 'तब एक जाति दूसरी जाति के विरुद्ध तलवार फिर न चलाएगी; और लोग आगे को युद्ध विद्या न सीखेंगे। परन्तु वे अपनी-अपनी दाखलता और अंजीर के वृक्ष तले बैठा करेंगे, और कोई उनको न डराएगा' (मीका 4:3-4; तुलना करें यशा० 2:4). जीवन की नदी के किनारे छुड़ाये गये लोग जीवन के पेड़ के नीचे अपने साथ "अपने पड़ोसी को बैठने के लिये आमंत्रित करेगा" (जकारियाह 3:10). पेड़ की पत्तियों के चंगा करने के गुण सभी घावों को चंगा करेंगे- जाति, भाषा, समुदाय, जिसने मानवता को युगों से तोड़ा और विभाजित किया है।" – Ranko Stefanovic, Revelation of Jesus Christ: Commentary on the book of Revelation, P. 593.

बृहस्पतिवार **दिसम्बर 27**

नई पृथ्वी में जीवन

पढ़ें यशायाह 35:4-10, 65:21-25. जो हम अभी अनुभव करते हैं उससे तब जीवन कितना भिन्न होगा?

_____

_____

यशायाह की किताब में अनेक बार हम कुछ 'नया' की बात पढ़ते हैं: "नई चीजें" (42:9, 48:6), "नया गीत" (42:10), "नई चीज" (43:19), "नया नाम" (62:2). अध्याय 65 में जो नया है चीजों की नई व्यवस्था है। परमेश्वर की सारी सृष्टि के बीच आनन्द और ताल-मेल है। वाचा अनाज्ञाकारी और विद्रोह के लिये भूमि को श्रापित करती है (देखें लैव्य० व्य० 26:14-17, व्य०वि० 28:30) यह हमेशा के लिये रद्द हो जाएगी, क्योंकि अब पाप नहीं है, परन्तु आशीषों की पर्याप्तता होगी, रहने को घर होंगे और खाने को भोजन होगा।

ऐसे सुन्दर स्थान पर जीवन किसके समान होगा? कुछ लोग आश्चर्य करते हैं कि क्या हम अपने दोस्तों और परिवार के लोगों को पहचानेंगे, जब हमारा शरीर अमरता को प्राप्त करता है और पूर्ण रूपेण परमेश्वर के स्वरूप में पुनर्स्थापित होते हैं। मसीह के जी उठने के बाद उसके चेलों ने उसे पहचान लिया था। मरियम ने उसकी आवाज को पहचान लिया (यूहन्ना 20:11-16). थोमा ने यीशु के शारीरिक स्वरूप को पहचान लिया (यूहन्ना 20:27,28).

इम्माउस के दो चेलों ने भोजन की मेज पर उसके हावभाव को पहचान लिया (लूका 24: 30,31,35). इसलिये यदि हमारे शरीर यीशु के जी उठे शरीर की तरह हैं, तो हम निश्चय ही एक दूसरे को पहचान सकेंगे, और हम पुनर्स्थापित संबंध के अनंत की ओर आगे देखते हैं। हम सुरक्षित कल्पना कर सकते हैं कि हम उनसे संबंध जारी रखेंगे जो हमें जानते हैं और प्यार करते हैं और जो हमारे साथ हैं।

"छुड़ाये हुए लोग जानेंगे, जैसा वे भी जाने जाते हैं। प्रेम और सहानुभूति जिसे स्वयं परमेश्वर ने आत्मा में आरोपित किया है सत्य और मीठे अभ्यास को प्राप्त करेगा। पवित्र जीवों (प्राणियों) के साथ विशुद्ध सहभागिता, आशीषित स्वर्गदूतों के साथ और सभी युगों के विश्वस्त लोगों के साथ सामंजस्यपूर्ण सामाजिक जीवन, जिन्होंने मेम्ने के लहू में अपने वस्त्र धोये हैं और उन्हें श्वेत किया है, पवित्र बंधन जो एक साथ बांधता है 'जिससे स्वर्ग और पृथ्वी पर, हर एक घराने का नाम रखा जाता है (इफि० 3: 15)– ये छुड़ाये हुए लोगों की खुशी को बनाने में मदद करते हैं।"– Ellen G . White, The Great Controversy, P. 677.

"इसलिये हम हियाव नहीं छोड़ते.... क्योंकि हमारा पल भर का हल्का–सा क्लेश हमारे लिये बहुत ही महत्त्वपूर्ण और अनन्त महिमा उत्पन्न करता जाता है; और हम तो देखी हुई वस्तुओं को नहीं परन्तु अनदेखी वस्तुओं को देखते रहते हैं; क्योंकि देखी हुई वस्तुएँ थोड़े ही दिन की हैं परन्तु अनदेखी वस्तुएँ सदा बनी रहती हैं (2कुरि० 4: 16–18)।

अस्थायी और क्षणभंगुर संसार में, हम अनदेखी और अनन्त वस्तुओं तक पहुँच बनाना और पकड़ना कैसे सीख सकते हैं ?

शुक्रवार **दिसम्बर 28**

अतिरिक्त विचार: एलेन जी० ह्वाईट, Behold I Come Quickly," PP. 355-359, in Counsels for the Church. Read the articles " Resurrection" PP. 1082-1084, and "Heaven and New Earth," PP. 863, 864, in the Ellen G. White Encyclopedia.

"हमारे प्रभु का पुनरुत्थान और स्वर्गारोहण एक निश्चित प्रमाण है कि मृत्यु और कब्र पर परमेश्वर के संतों ने जीत हासिल की है, और एक संकल्प है कि स्वर्ग उन सभों के लिये खुला है जो अपने चरित्र के वस्त्र को मेम्ने के लहू में धोते और सफेद करते हैं। यीशु मानव जाति के प्रतिनिधि के तौर पर पिता के पास चला गया, और परमेश्वर उन्हें लायेगा जो उसके स्वरूप को उसकी महिमा को बांटने के लिये प्रतिबिंबित करते हैं।

"पृथ्वी के तीर्थयात्रियों के लिये घर हैं। धर्मियों के लिये महिमा के मुकुट और जीत की हथेलियों के साथ वस्त्र हैं। परमेश्वर की जुगाड़ में वह सब जिसने हमें उलझा दिया है उस आने वाले संसार में स्पष्ट किया जायेगा।

चीजें जो समझने में कठिन हैं उस समय वर्णित की जायेंगी। अनुग्रह का रहस्य हमारे सामने खोल दिया जायेगा। जहाँ पर हमारे सीमित दिमाग ने भ्रम और टूटी हुई प्रतिज्ञा को ढूंढ़ा, हम अति उत्तम और सुंदर संगति को देखेंगे। हम उस अनन्त प्रेम को जानेंगे जिसने अनुभवों को अनुशासित किया जो बहुत कोशिश करता हुआ जान पड़ता था। जैसे हम उसकी प्यार-भरी परवाह को महसूस करते हैं जो हमारी भलाई के निमित सभी चीजों को एक साथ काम करने देता है, हम पूरी महिमा और अकथनीय खुशी के साथ आनन्द मनायेंगे।" Ellen G. White, Counsels for the Church, P. 358.

विचार-विमर्श के लिये प्रश्नः

1. यद्यपि दूसरे मसीही (परन्तु सब नहीं) यीशु के दूसरे आगमन को शाब्दिक रूप से विश्वास करते हैं, मसीह के दूसरे आगमन के विषय में ऐडवेंटिस्टों के विश्वास में क्या खास है ?
2. दो मछलियाँ तैर रही थीं जब एक ने दूसरे से पूछा, "पानी कैसा है?" दूसरे ने जवाब दिया: "पानी क्या है?" तर्क यह है कि हम चीजों के इतने अभ्यस्त हो जाते हैं कि हम महसूस नहीं करते कि वे कितने प्रचलित हैं। उदाहरण के लिये पाप में जन्म लेकर, पाप से भरे हुए, और पापमय संसार में रहकर, वाकई में हम कैसे उस सुन्दर नये अस्तित्व में, जो हमें नये स्वर्ग में एवं नई पृथ्वी में मिलेगा, एक अच्छी पकड़ ले सकेंगे? सीमाएँ जो भी हों हमें क्यों अभी भी कल्पना करने की कोशिश करनी चाहिए कि यह किस प्रकार होगा?
3. कोई प्रश्न नहीं कि, हमारा अस्तित्व नई पृथ्वी में जो भी हो, हम मेल से एक दूसरे के साथ रहेंगे। इस वक्त हम स्वयं को तैयार होने में मदद करने के लिये, जब वह घटना घटती है, क्या कर सकते हैं?

साराँशः- बाईबल आत्म-विश्वास के साथ उस समय के विषय बातें करती है जब इस पृथ्वी की पुर्नसृष्टि होगी और पाप के प्रकोप को हमेशा के लिये मिटा दिया जायेगा। आखिरकार मानवता का पुनर्स्थापन इसके मूल उद्देश्य के लिये किया जायेगा, और सब लोग एक संगति में वास करेंगे। मसीह में हमारी वर्तमान आत्मिक एकता, हालाँकि इस वक्त पूर्ण रूप से महसूस नहीं होती है, उस समय जीवता और अनन्त वास्तविकता होगी।